गुरुकृपा

श्रीगुरु की कृपा के विषय पर शास्त्रों से उद्धरण

कुलार्णवतन्त्र से एक श्लोक

कुलार्णवतन्त्र, १७.७

गुशब्दस्त्वन्धकारः स्यात् रुशब्दस्तन्निरोधकः।
अन्धकारनिरोधित्वात् गुरुरित्यभिधीयते॥

'गु' अक्षर अन्धकार का द्योतक है।
'रु' दर्शाता है उन्हें जो अन्धकार के निरोधक [रोकनेवाले] व नाशक हैं।
अतः, वे जो अज्ञान के अन्धकार को दूर करने वाली शक्ति के मूर्तरूप हैं,
उन्हें 'गुरु' कहा जाता है।

© २०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।